Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

यमदीप: किन्नरों के संघर्ष की कथा

निकिता बोहिदार*

* अतिथि संकाय, सरकारी महिला महाविद्यालय, संबलपुर (ओडिशा) भारत

शोध सारांश – ईश्वर ने संसार का सृजन किया। समाज को संचालित करने के लिए उन्होंने दो सुंदर मानवी रूपों का निर्माण भी किया एक है पुरुष और दूसरा है नारी। आदिम काल से ही दोनों का कार्य सामान्यत: एक दूसरे के सहयोग से जीवन व्यतीत करना और बच्चों को जन्म देकर मानव जाति को आगे बढ़ाना समझा जाता है। परंतु मानव समाज में इन दो लिंगों के अलावा एक तीसरा लिंग है जो न ही पूर्ण रूप से पुरुष है और न ही पूर्ण रूप से स्त्री है। समाज में इन्हें हिंजड़ा, किन्नर,बुचरा आदि नाम दिए गए हैं। इनका स्थान समाज में हमेशा ही उपेक्षित रहा है।

प्रस्तावना – किन्नर एक ऐसा शब्द है जिसका संबंध समाज में तो क्या उसके अपने परिवार से भी न के बराबर होता है। किन्नर अपने आप में ही एक त्रासदीपूर्ण साहित्य है। जहां पर समाज में शिव और पार्वती के अर्धनारीश्वर रूप की पूजा होती है वहीं पर उन्हीं के स्वरूप किन्नरो का हर स्थान पर अपमान होता है। किसी भी घर में किन्नर का जन्म अभिशाप माना जाता है जन्म से ही उसे अपने परिवार से दूर कर दिया जाता है। लेकिन कोई यह क्यों नहीं सोचता की किन्नर भी इंसान है उन्हें भी जीने का अधिकार है। समाज में 100% परिवार से केवल 10%लोग यही सोचते हैं कि किन्नर का भी अपना एक अस्तित्व है उसे भी जीने का हक है। लेकिन आज किन्नर संप्रदाय भी अपने अधिकार के बारे में जान चुकी है और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है।

आज 21वीं सदी में हिंदी साहित्य अपना ध्यान स्त्री विमर्श और दलित विमर्श जैसे विषयों के साथ किन्नर विमर्श पर भी केंद्रित कर रहा है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए नीरजा माधव ने यमदीप उपन्यास लिखकर समूचे हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श का दरवाजा खोल दिया। यमदीप के माध्यम से उन्होंने इस समुदाय के विभिन्न प्रश्नों को आवाज दी और समाज के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

'किन्नर भी मानव का ही एक रूप
यह मत भूल वह तो स्वयं अर्धनारीश्वर का ही स्वरूप
अपमान ना उसका कर
स्नेह दृष्टि से उसे देखा कर'

यमदीप: किन्नरो के संघर्ष की कथा– हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श का प्रारंभ 2002 के बाद देखने को मिलता है। यमदीप उपन्यास प्रशासन के बाद ही हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत माना जाता है। नीरजा माधव जी ने इस कथा के माध्यम से किन्नरो की पीड़ा किन्नरों के संघर्ष,लैंगिक असमानता आदि के बारे में चर्चा किया है। यमदीप शब्द का अर्थ होता है– दीपावली की पूर्व संध्या पर घर से बाहर कचरा के ढेर या सड़कों पर जलाए जाने वाले दीप को यमदीप कहते हैं। इस दीपक को जलाने वाला फिर कभी मुड़कर उसे नहीं देखता, उसे अकेला छोड़ देता है, यही स्थिति समाज में किन्नरों की होती है। किन्नर को इस दीप की तरह अपने घर और समाज से दूर कर दिया जाता है और उसे हर क्षेत्र में उपेक्षित रखा जाता है।

निम्नलिखित विशेषताओं के माध्यम से यमदीप उपन्यास में किन्नरों के संघर्ष को समझ सकते हैं –

1. **समाज से अपने अस्तित्व छुपाने का भय –** समाज में पुरुष और नारी के अस्तित्व के बाद तीसरी अस्तित्व अर्थात किन्नर का अस्तित्व ही नहीं होता है। किन्नर की पहचान जन्म से नहीं होता जब वह धीरे–धीरे बड़े होते हैं तो उनके शरीर के हाव भाव से पता चलता है, उन्हें हमेशा डर लगा रहता है कि उनके किन्नर होने के सच से कोई अवगत न हो जाए। यमदीप उपन्यास में भी वही होता है इस उपन्यास की मुख्य पात्र नाजबीवी जो नंद रानी के रूप में जन्म लेती है। नंद रानी का किन्नर के रूप में जन्म लेते हैं पिता फूट–फूट कर रोने लगते हैं और घर में मातम का माहौल छा जाता है। इसीलिए परिवार के सभी सदस्य प्रयास करते हैं की नंद रानी से जुड़ी बातों का किसी को पता न चले।

नंदरानी जब आठवीं कक्षा में पढ़ती है तो कुदरत अपना करिश्मा दिखाती है। नंदरानी के स्त्रीय शरीर में दाढ़ी मूंछें उग आती है। यह सब देखकर समाज उस पर हँसने लगता है। समाज के भाई से परेशान होकर माता–पिता सोचने लगते हैं कि अब क्या करें। समाज द्वारा हो रहे अपमान और पारिवारिक प्रताड़ना को नंदरानी सह नहीं पाती है और सदा के लिए हिजड़ों की बस्ती में चली जाती है। यहाँ वह नंद रानी से नाजबीबी बन जाती है और नर्क समान संसार में अपना जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाती है। अगर परिवार द्वारा नंदरानी को संरक्षण मिलता और समाज द्वारा उसके अवहेलना नहीं होती तो वह किन्नर की इस गंदी बस्ती में आकर जीने से बच सकती थी। लेकिन परिवार और समाज की संवेदनहीनता के कारण एक होशियार और होनहार बच्ची का जीवन समाज और परिवार की आंखों के सामने बर्बाद हो गया।

2. **लैंगिक असमानता –** लैंगिक आधार पर सिर्फ पुरुष और स्त्री को ही समानता मिलता आया है। इन दोनों लिंगों को ही शिक्षा,व्यवसाय,संगीत, नृत्य, राजनीति आदि क्षेत्र में स्थान मिलता है। लेकिन किन्नर एक ऐसा शब्द है जिसे लैंगिक आधार पर कभी समानता मिला ही नहीं है। चाहे वह किन्नर शिक्षित ही क्यों ना हो उसे हमेशा घृण्य दृष्टि से देखा जाता है। इस उपन्यास

में नाजबीवी के माता-पिता उसे पढाना चाहते हैं लेकिन महताब गुरु कहते हैं कि माताजी किसी स्कूल में आज तक हिजड़ों को पढ़ते-लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिंजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्ट्री में किसी में भी? अरे इसकी दुनिया यही है,माताजी कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार करती है। इस प्रश्न के माध्यम से लेखिका सरकार से कुछ महत्वपूर्ण सवाल पूछना चाहती हैं, जिन का उत्तार शायद सरकार और देश के बुद्धिजीवियों के पास भी नहीं है। यह सवाल है कि ऐसा क्यों है कि किन्नर शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते? क्या ज्ञान और शिक्षा लिंग के आधार पर मिलती है? जहां तक परिवार की बात आती है अगर कोई बच्चा लंगड़ा, लूला, अंधा या अपाहिज जन्म लेता है तो समाज और परिवार उस बच्चे को सामान्य बच्चों की तरह अपनाता है। उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी परिवार के साथ कुछ गैर सरकारी संस्थाएं भी उठाती है। लेकिन जिन बच्चों का जन्म जननांग को विकार के साथ होता है, उनके प्रति किसी की कोई सहानुभूति नहीं होती। ऐसे बच्चों की अवहेलना की जाती है,जबकि उनका इसमें कोई दोष नहीं होता।

3. उपेक्षितपूर्ण दृष्टिकोण- समाज में हो या अपने परिवार में हो किन्नर हर स्थान पर उपेक्षा पूर्ण दृष्टि से देखी जाती है। उसमें उनका क्या दोष है कि उनको किन्नर के रूप में जन्म लेना पड़ा। किन्नर के ताली बजाने को देखकर बहुत सारे लोग उसका मजाक भी उड़ाते हैं,उनके साथ दुर्व्यवहार भी करते हैं। हर तरफ से उपेक्षित होने के बावजूद भी किन्नर अपने परिवार के प्रति स्नेह बंधन को तोड़ नहीं सकते। यमदीप उपन्यास में नाजबीबी भी अपने माता-पिता की सेवा करना चाहती है और उनके साथ अपनी खुशियों के पल व्यतीत करना चाहती है। लेकिन उसके अपने भाई और भाभी द्वारा उसको बहुत अपमानित किया जाता है। तीसरे लीग जो किसी के प्रति उपेक्षा या द्वेष की भावना नहीं रखते समाज और परिवार द्वारा उनसे दूर रहने पर विवश किया जाता है। नाजबीवी का घर आना जाना उसके भाई को पसंद नहीं आता है वह कहता है:-

'देखो तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना हमारी इज्जत तो बढाता नहीं, उल्टे तुम्हें भी दुख होता है और मम्मी पापा को भी, समझ लो तुम अनाथ हो तुम्हारा इस संसार में कोई नहीं है।'

मां की मृत्यु के बाद नाजबीबी शमशान आती है तब लोग उसे हिंजड़ा समझ कर उपेक्षापूर्ण नजरों से देखते हैं।

4. आर्थिक रूप से अक्षम - किन्नर समाज को तिरस्कार के अलावा आर्थिक अभाव से भी गुजरना पड़ता है। किन्नर हमारे समाज के हर मांगलिक उत्सवों पर नाच गाना करके अर्थ उपार्जन करते हैं और अपना जीवन निर्वाह करते हैं। नाच गाना करते समय किन्नरों को इस हिंसक समाज के अश्लील दृष्टि को भी सहना पड़ता है। आर्थिक उपार्जन के लिए भी किन्नरों के लिए एक निश्चित क्षेत्र निर्धारित होता है। यदि किसी कारणवश इन्हें दूसरी मंडली के क्षेत्र में जाना पड़ जाए तो उस मंडली के किन्नर विरोध करते हैं। आर्थिक अभाव के कारण नाजबीबी को सोना की शिक्षा की चिंता सताती है। वह कुछ पैसे कमाने के लिए अपने समूह के साथ दूसरे मंडली के क्षेत्र में जाने को विवश होती है। लेकिन वहां उसे चोट लग जाती है और वह घायल होकर लौटती है। आधुनिकता के प्रभाव के कारण अब घरों में शुभ अवसरों पर किन्नरों का आना,नाचना गाना और फिर पैसे देना लोगों को पसंद नहीं आता है। इस कारण अब इस समुदाय के लोगों के आय अर्जित करने में कमी होने लगी है।

5. मानवतावादी दृष्टिकोण - आज के आधुनिक समाज में जहां खून के रिश्ते भी मुश्किल समय में सहायता नहीं करते हैं वहीं पर इस उपन्यास में किन्नर समुदाय के माध्यम से मानवता को शिखर भूमि में पहुंचाया गया है। यमदीप उपन्यास के प्रारंभ से ही एक प्रसव पीड़ा से तड़प रही पागल महिला को नाजबीवी और उसके साथी उसकी पीड़ा से राहत दिलवाते हैं। वहीं पर महिलाएं कोई उनकी मदद के लिए नहीं आते हैं। यह मानवता के ऊपर बहुत बड़ा कलंक है। पागल महिला की पीड़ा देखकर किन्नरों को दुख होता है और दया आती है। लेकिन समाज को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बारे में नाजबीवी मनुष्य जाति को कोसती है और कहती हैं :-

'जब कोई न पूछने आए, तो क्या हम भी छोड़ देंगे? अरे हम हिजड़े हैं, हिजड़े इंसान है क्या, जो मुंह फेर ले?'

इस प्रकार सभी किन्नर मिलकर उस पागल महिला का प्रसव कराते हैं, लेकिन महिला की मृत्यु हो जाती है और एक सुंदर बच्ची का जन्म होता है। नाजबीबी उस बच्चे को लेकर आसपास के सभी घरों में जाकर उसे पालने की अपील करती है लेकिन कोई भी उसे नहीं अपनाते। अंत में नाजबीबी उसका पालन करती है। किन्नरो की बस्ती में उस बच्चे को पालना आसान नहीं था फिर भी नाजबीवी सबकी नजरों से बचकर उस बच्ची को पालती है। नाजबीबी उसे अपने बच्चे की तरह प्यार करती है उसे शिक्षित करने हेतु विद्यालय भेजती है। एक मां के हर कर्तव्य को नाजबीबी निभाती है। जिसे किसी ने नहीं अपनाया उसे किन्नरों ने अपनाया।

निष्कर्ष - निष्कर्ष रूप में यही स्पष्ट होता है कि किन्नरों का जीवन मानसिक,शारीरिक और सामाजिक रूप से संकटों से पूर्ण रहता है। लेकिन धीरे-धीरे उनकी स्थिति सुधर रही है। आज हर जगह पर किन्नरों के लिए एक संस्थान बनाया जा चुका है और आज किन्नर हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। यमदीप उपन्यास के माध्यम से नीरजा माधव ने किन्नर विमर्श, स्त्री विमर्श और वृद्ध विमर्श के बारे में बताया है। देखा जाए तो मनुष्य के इस हिंसक दुनिया में किन्नर ही ऐसा लिंग है जिसके पास मनुष्य से भी बड़ा मानवता पूर्ण हृदय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ संख्या- 250
2. यमदीप, नीरजा माधव (2002) सुनील साहित्य सदन, दिल्ली।
3. यमदीप, नीरजा माधव, पृष्ठ संख्या- 82
4. वही, पृष्ठ संख्या -95
5. वही, पृष्ठ संख्या -46
6. वही, पृष्ठ संख्या-137
7. वही, पृष्ठ संख्या-139
8. वही, पृष्ठ संख्या -12
9. वही, पृष्ठ संख्या-13
10. वही, पृष्ठ संख्या-115-116
11. वही, पृष्ठ संख्या-269
12. वही, पृष्ठ संख्या -53

****